वर्तमान समाज में उत्तर प्रदेश पुलिस की प्रस्थिति और भूमिका (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

[1]डॉ श्री भगवान

शोध सारांश

वर्तमान समाज में उत्तर प्रदेश पुलिस की प्रस्थिति और भूमिका (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) किसी भी समाज में सभी व्यक्तियों को मिलने वाले अधिकार और कर्तव्य एक जैसे नहीं होते। समाज में कुछ व्यक्ति उच्च पदों पर आसीन होते है, जबकि अनेक दूसरे व्यक्तियों की स्थिति उनकी तुलना में काफी नीची रहती है। विभिन्न क्षेत्रों में एक ही व्यक्ति की स्थिति एक दूसरे से भिन्न देखने को मिलती है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति को विभिन्न नियमों और मूल्यों के द्वारा जो पद प्राप्त होता है, समाजशास्त्रीय भाषा में उसी को व्यक्ति की 'प्रस्थिति' status कहा जाता है।

मूल शब्द: पुलिस, प्रस्थिति, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, उत्तर प्रदेश

[1]Corresponding Author

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद 244001 email : sbyadav23@gmail.com Mobile 9412594139

प्रस्तावना

प्रस्थिति और भूमिका समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी एक या अनेक प्रस्थितियों के अनुसार ही एक दूसरे से भिन्न उन बहुत से दायित्वों को पूरा करना होता है। जिनकी उससे पूरा करने की आषा की जाती है। पुलिस की प्रस्थितिसमाज व कानून के बीच संतुलन उत्पन्न करने की है। [1] प्रजातान्त्रिक समाज में पुलिस को कवल राज्य और कानून के एक प्रतीक और प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है। इस रूप में पुलिस उस शक्ति का उपयोग करने में समर्थ होती है जिसे राज्य की शक्ति कहते हैं। इस शक्ति द्वारा राज्य समाज के अन्य संगठनों तथा व्यक्तियों पर नियंत्रण स्थापित करता है। प्रजातांत्रिक

और कल्याणकारी समाज में राज्य स्वयं समाज का ही अंग है।[2] जिसका उददे्ष्य समाज कल्याण होता है इस दृष्टि से भी पुलिस को अपनी शक्ति , सत्ता और संगठन का उपयोग सामान्य कल्याण को बढ़ाने वाली क्रियाओं में करना पड़ता है। परन्तु कठिनाई तब उत्पन्न होती है, जब वे व्यक्ति और समूह जिनके हाथ में राज्य की सत्ता होती है, उसका उपयोग व्यक्तिगत या सामूहिक स्वार्थों के लिए करने लगते हैं। तब राज्य या सरकार की क्रियाओं और समाज के व्यापक हितों में विरोध उत्पन्न हो जाता है। अतः स्वतन्त्र समाज में राजकीय सत्ता पर उचित नियंत्रण और प्रतिबन्ध लगाने की आवष्यकता होती है। अतः पुलिस राज्य के साधन के रूप में केवल दबाब और शोषण का माध्यम बन जाती है। शोधकर्ता ने जब युवाओं से यह पूछा कि वर्तमान समय में समाज में पुलिस का स्थान कैसा है? तो निम्न तालिका युवा सूचनादाताओं द्वारा दिये गये उत्तरों को स्पष्ट करती हैः

तालिका नं0. 01

समाज में पुलिस का स्थान

क्र0सं0	सूचनादाताओं से प्राप्त उत्तर	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य	113	37.66
2	डच्च	27	9.00
3	निम्न	90	30.00
4	अनुत्तर	70	23.34
	योग	**300**	**100**

उपरोक्त तालिका के आंकड़ों का विष्लेषण तथा विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि 300 सूचनादाताओं में से 113 (37.66%) सूचनादाताओं ने यह माना कि समाज में पुलिस का स्थान सामान्य है। 27 (9%) ने स्वीकार किया कि सामाज में पुलिस का स्थान उच्च है। 90 (30 %) सूचनादाता ऐसे थे जो यह मान रहे थे कि

समाज में पुलिस की स्थिति निम्न है। इसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। 70 (23.34%) सूचनादाता अनुत्तर रहे।

इस प्रकार सर्वाधिक 113 (37.66%) युवाओं ने यह स्वीकार किया कि वर्तमान समाज में पुलिस का स्थान सामान्य है। इसके बाद शोधकर्ता ने उनसे पूछा कि क्या पुलिस अपनी प्रस्थिति का अनुचित लाभ उठाती है? निम्न तालिका इस प्रश्न के उत्तर का विवरण प्रस्तुत करती है ।

तालिका नं0 02

पुलिस की प्रस्थिति के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण

क्र0सं0	सूचनादाताओं से प्राप्त उत्तर	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	230	76.66
2	नहीं	60	20.00
3	कभी-कभी	10	3.34
	योग	**300**	**100**

उपरोक्त तालिका से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण व विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि 300 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 230 (76.66%) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया कि 'हा' पुलिस अपनी प्रस्थिति का अनुचित लाभ उठाती है। 60 (20.00%) युवा सूचनादाताओं ने यह माना कि ऐसा 'नहीं' तथा 10 (3.34%) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया कि ऐसा 'कभी-कभी' होता है। इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के प्रकाष में यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक 230 युवा सूचनादाताओं ने यह माना कि हां पुलिस अपनी प्रस्थिति का अनुचित लाभ उठाती है। कुछ सूचनादाताओं ने शोधकर्ता को यह भी जानकारी दी कि पुलिस पैसे से उन कार्यो को भी करने लगती है जो इनके कार्य क्षेत्र में नहीं आते हैं जैसे कभी-कभी पुलिस के आरक्षी रेलगाड़ी में टिकट

चैक करने लगते हैं, बिना टिकट यात्रियों को पैसा लेकर ट्रेन में बैठा लेते हैं। शोधकर्ता ने सूचनादाताओं से यह भी जानना चाहा कि वर्तमान पुलिस छवि कैसी है? निम्न तालिका इस प्रष्न के उत्तर का विवरण प्रस्तुत करती हैः-

तालिका नं0 03

वर्तमान पुलिस छवि कैसी है?

क्र0सं0	सूचनादाताओं से प्राप्त उत्तर	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अच्छी	80	26.66
2	बहुत अच्छी	50	16.66
3	बुरी	130	43.34
	अनिश्चित	40	13.34
	योग	**300**	**100**

उपरोक्त तालिका से प्राप्त आंकड़ों का विष्लेषण तथा विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि 300 सूचनादाताओं में से 80 (26.66%) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया कि वर्तमान पुलिस छवि अच्छी है। 50 (16.66%) सूचनादाताओं ने माना कि बहुत अच्छी है। 30 (43.34%) सूचनादाताओं ने स्वीकार किया कि पुलिस छवि बुरी है तथा 40 (13.34%) सूचनादाताओं का उत्तर अनिश्चित था। इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा सकता है कि सर्वाधिक 130 (43.34%) युवा सूचनादाताओं ने कहा कि पुलिस की छवि बुरी है। पुलिस की छवि युवाओं की नज़र में बुरी क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर शोधकर्ता ने अपने इस प्रश्न के माध्यम से जानना चाहा कि क्या पुलिस अपने अधिकारों का दुरूपयोग करती है? निम्न तालिका इस प्रश्न के उत्तर का उल्लेख करती हैः

तालिका नं0 04

पुलिस के अधिकारों का मूल्यांकन

क्र0सं0	सूचनादाताओं से प्राप्त उत्तर	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हां	225	75.00
2	नहीं	50	16.66
3	पता नहीं	25	8.34
	योग	**300**	**100**

उपरोक्त तालिका से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण तथा मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि 300 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 225;(75.00) युवा सूचनादाताओं ने कहा कि पुलिस अपने अधिकारों का दुरूपयोग करती है। 50 (16.66) सूचनादाताओं ने माना कि पुलिस अपने अधिकारों का दुरूपयोग नहीं करती है। 25 (8.34) सूचनादाताओं ने स्वीकार किया कि पुलिस छवि बुरी है तथा 40 (13.34) युवा सूचनादाताओं ने यह माना कि इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। उनका कहना था कि कभी-कभी ऐसा होता है जब अपने अधिकारों का दुरूपयोग करती है।

उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा सकता है कि 75% युवा सूचनादाताओं यह मानते है कि पुलिस अपने अधिकारों का दुरूपयोग करती है। सूचनादाताओं ने शोधकर्ता को बताया कि कभी-कभी पुलिस अपनी वर्दी क डर दिखा कर दूध बेंचने वालों से मुफ्त दूध, ठेले वालों से सब्जी आदि ले जाती है। यदि कोई पैसे मांगने की हिम्मत भी करता है तो अगले दिन वह अपने उस स्थान सब्जी पर का ठेला इत्यादि नहीं लगा सकता।

पुलिस की समाज में कार्यकारी भूमिका

समान्य शब्दों में भूमिका का तात्पर्य उन सभी कार्यों से है जिनको विभिन्न प्रस्थितियों के अनुसार व्यक्ति से पूरा करने की आशा की जाती है । प्रत्येक व्यक्ति की प्रथाओं , परम्पराओं, आदर्श नियमों तथा कानून के अनुसार प्रत्ेयक प्रस्थिति से सम्बन्धित कुछ ऐसे कार्य अथवा दायित्व होते हैं जिनकी समाज द्वारा व्यक्ति से पूरा करने की आशा की जाती है। इन्हीं को संक्षेप में प्रस्थिति की भूमिका कहते है।[3] राल्फ लिंटन के शब्दों में -'' भूमिका के अन्तर्गत हम उन सभी मनोवृत्तियों सामाजिक मूल्यों और व्यवहारों को सम्मिलत करते हैं जिन्हें समाज द्वारा एक विशेष प्रस्थिति से सम्बन्धित व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के लिए निर्धारित किया जाता है।'' भूमिका का कार्य उन दायित्वों को पूरा करने से है जिनसे उस प्रस्थिति का मूल्य बना रहे। शोधकर्ता ने ने युवाओं से जाना चाहा कि पुलिस की कार्यकारी भूमिका किस प्रकार की हैं निदर्षित से प्राप्त उत्तरों को निम्न तालिका में दर्षाया गया हैः

तालिका नं0 05

पुलिस की कार्यकारी भूमिका

क्र0सं0	सूचनादाताओं से प्राप्त उत्तर	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	ईमानदार	35	11.66
2	भ्रष्ट	210	70.00
3	तटस्थ	55	18.34
	योग	**300**	**100**

उपरोक्त तालिका से प्राप्त आंकड़ों का विष्लेषण तथा विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि 300 युवा सूचनादाताओं में से मात्र 35 (11.66%) युवा सूचनादाताओं ने स्वीकार किया कि पुलिस एक ईमानदार अंग है। सर्वाधिक 210 (70.00%) युवा सूचनादाताओं ने कहा कि पुलिस एक भ्रष्ट अंग है

। 55 (18.34%) युवा सूचनादाताओं का उत्तर तटस्थ रहा। इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि:-

1. आज के समय पुलिस लगभग भ्रष्ट हो गई है।
2. तहसील बिसौली के कुछ सूचनादाताओं ने शोधकर्ता को बताया कि वहां पुलिस तब तक कोई कार्यवाही नहीं करती जब तक उसे सुविधा शुल्क (जेब खर्च) नहीं दे दिया जाता है। उनका कहना था कि FIR तभी पंजीकृत होती है जब वहां भुगतान कर दिया जाता है इसके बाद अगली कार्यवाही हेतु और पैसा देना पड़ता है।

3. तहसील बिल्सी के अधिकांष सूचनादाताओं ने चर्चित ज्योति शर्मा (छात्रा) अपहरण कांड का उल्लेख शोधकर्ता के समक्ष किया तथा बताया कि किस प्रकार धन तथा बाहुबल के दबाव में पुलिस ने इस कांड को उलझा दिया।

4. पुलिस की छवि एक भ्रष्ट अंग के रूप में युवाओं के सामने आना, पुलिस की एक मजबूरी भी है क्योंकि कई बार राजनेताओं के दबाव पुलिस पर इतने बढ़ जाते हैं कि वह स्वेच्छा से तथा ईमानदारी पूर्वक कोई भी निर्णय नहीं कर सकती । पुलिस का कर्तव्य लोगों में सुरक्षा की भावना बनाये रखना और जिन बातों से लोगों में असुरक्षा की भावना पैदा होती है, उन्हें रोकना है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि पुलिस का काम आन्तरिक शांति व व्यवस्था बनाये रखना तथा कानून व नियमों को तोड़ने वालों या उनका पालन न करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करना है। पुलिस प्रशासन का अंग है और उसका काम कानून का पालन करवाना है।[4]

पुलिस के इस काम के दो पहलू हैं-

1 - ऐसा प्रबन्ध करना कि कानून का पालन हो और 2- यदि कानून का उल्लंघन करके कोई झगड़ा, दंगा, अन्याय, अत्याचार अथवा चोरी, डकैती करता है तो उसके खिलाफ कार्यवाही हो। यह काम बड़ी जिम्मेदारी का है। जिस समाज में पुलिस की व्यवस्था जितनी अच्छी होती है उस समाज में उतनी ही अधिक स्थिरता रहती है।

सैद्धांतिक दृष्टि से पुलिस का काम एक जैसा ही होता है चाहे राज्य लोकतान्त्रिक हो या तानाशाही किन्तु व्यवहार में पुलिस की भूमिका अलग-अलग होती है। तानाशाही शासन में तानाशाह समाज के कल्याण की नहीं बल्कि अपनी कुर्सी की चिन्ता करता है। अपनी कुर्सी बचाने हेतु वह पुलिस से नाजायज काम कराता है और जनता पुलिस के अत्याचारों का षिकार होती है। भारत में

जब अंग्रेजो का शासन था तो अंग्रेज़ अपनी सरकार के हितों की रक्षा के लिए पुलिस की सहायता लेते थे और इसी कारण उन दिनों पुलिस को जालिम, अत्याचारी और निरंकुश समझा जाता था। लोग पुलिस को अपना रक्षक नहीं बल्कि भक्षक मानते थे। पुलिस जनता पर मनमाने अत्याचार करती थी और जनता की आवाज को कुचल देती थी। उस समय पुलिस की मनोवृत्ति ऐसी ही थी। मानो व अंग्रेजो की समर्थक और जनता की शत्रु थी।

निष्कर्ष

आज के प्रजातान्त्रिक शासन के अन्तर्गत पुलिस जनसेवा के अनेक कार्य करती है। यद्यपि उसका प्रधान कार्य जनता के जानमाल की रक्षा करना और शांति बनाए रखना है किन्तु आज स्थिति यह है कि कठिनाई में फंसा प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त पुलिस का दरवाजा खटखटाता है। मौके पर पुलिस सरकार की प्रतिनिधि होती है। पुलिस शांति की प्रतीक और शांति भंग करने वालों की शत्रु है।[5] पुलिस जन सेवा के अनेक कार्य करती है जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करना , रात्रि के समय बस्तियों में गस्त करना, नवागान्तुकों का मार्गदर्शन करना, भटके या खोये हुए बच्चों को उनके मां बाप के पास पहुंचना इत्यादि। अपराध हो जाने पर पुलिस दुर्घटना स्थल पर और अन्यंत्र भी उसकी जांच करती है। कई बार अपराधी भाग , छिप कर फरार या लापता हो जाता है, पुलिस उसे ढूंढ निकालती है। चोर, डाकुओं आदि को पकड़ने ,दंगों से निपटने, अपराधियों को पकड़ने के लिए पुलिस जासूसी का भी काम करती है। ऐसी परिस्थितियों में और हथियार से लैस चोर -डाकुओं का सामना करने में पुलिस की जान को खतरा रहता है। किन्तु पुलिस अपनी जान की परवाह न करके अपने कर्तव्य का पालन करती है।

देश को स्वाधीनता के बाद ही पुलिस को समाज का सहयोग किस प्रकार मिले, पुलिस जन आकांक्षाओं की पूर्ति का साधन कैसे बने तथा वर्तमान कल्याणकारी राज्यों में युवाओं के प्रति पुलिस की क्या भूमिका हो आदि प्रश्न पुलिस के सामने उत्पन्न हो रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विवके रामलाल - '' ग्रामीण पुलिस- समस्याऐं एवं समाधान'' पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 1989, पृ0 102

2. माथुर कृष्ण मोहन- '' स्वातंत्रयोत्तर भारत में जनता का उत्तरदायित्व तथा पुलिस की भूमिका'' पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 1991, पृ0 27

3. स्वामी मीनाक्षी- '' सामाजिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में पुलिस की भूमिका का उदभव'' पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 1994, पृ0 27

4. चतुर्वेदी शैलेन्द्र कुमार- '' भारतीय पुलिस का इतिहास'' (अतीत काल से मुगल काल तक), पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, 1987, पृ0 69

5. मैहरोत्रा एस0के0- '' आधुनिक भारत का आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहास'', सुरजीत पब्लिकेषन्स, नई दिल्ली, 1981, पृ0 9-10

6. जैन पुखराज- '' भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और भारतीय गणतन्त्र का संविधान'', साहित्य भवन पब्लिकेषन्स आगरा, 2003, पृ0 11-28 .